B.Com.(HONS)
P3- Cost & Management Accounting.
Paper- VI
Date- 22.07.2020.

प्रो० धनंजय कुमार
सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय
राजनगर (मधुबनी)

UNIT- II
TOPIC - CONTRACT COSTING

MEANING OF CONTRACT :- जब किसी कार्य को पूरा करने का समय पहले ही निश्चित हो जाता है, तथा कार्य की समाप्ति पर निश्चित रकम का भुगतान कर दिया जाता है तो उसे ठेका या संविदा कहा जाता है। यह एक ऐसा समझौता है जिसके अंतर्गत किसी निश्चित कार्य को निश्चित समयावधि में एक निश्चित मूल्य पर करने का वचन दिया जाता है। इस संविदा में, जो व्यक्ति ठेके पर कार्य कराता है, उसे ठेकादाता तथा जो व्यक्ति ठेके पर कार्य पूरा करने का वचन देता है, उसे ठेकेदार कहा जाता है।

ठेका लागत विधि लागत लेखांकन की एक ऐसी पद्धति है जो उन व्यक्तियों द्वारा अपनाई जाती है जो निर्माण कार्यों को ठेका पर करते हैं। अन्य व्यवसायों की भांति ठेकेदार भी प्रत्येक ठेके के संबंध में लागत व आय की पूर्ण जानकारी प्राप्त करना चाहता है ताकि वर्ष के अंत में ठेके पर हुए लाभ या हानि का पता लगा सके। इसके लिए वह ठेका लागत (Contract costing) विधि को अपनाता है। यह विधि सामान्य रूप से वृहद आकार के कार्यों में प्रयुक्त होती है, जैसे- भवन निर्माण, पुल निर्माण, सड़क निर्माण व बाँध निर्माण आदि।

ठेका लागत विधि की विशेषताएँ :-

ठेका लागत विधि की विशेषता निम्नलिखित है :→

(i) इसमें अंतर्गत प्रत्येक आदेश या कार्य को एक इकाई (Unit) माना जाता है.

(ii) व्यक्ति की आवश्यकतानुसार ही कार्य के आदेश निर्गत किये जाते हैं'

(iii) प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष व्ययों के विभाजन एवं वर्गीकरण पर विशेष ध्यान रखा जाता है.

(iv) ठेके एक से अधिक होने आवश्यकतानुसार एक ठेके से दूसरे ठेके पर मशीन का हस्तांतरण आसानी से किया जाता' गया

(v) प्रत्येक ठेके पर अर्जित लाभ या हानि अलग-2 ज्ञात करना.

प्रत्येक ठेके से संबंधित लागत व आय का पूर्ण हिसाब रखने के लिए ठेकेदार द्वारा एक खोला जाता है जिसे ठेका खाता (CONTRACT ACCOUNT) कहा जाता है. एक ही समय में ठेकेदार के पास एक से अधिक ठेके होते हैं इसलिए प्रत्येक ठेके के लिए अलग-2 ठेका खाता खोला जाता है. इसकी पहचान के लिये प्रत्येक ठेके को — एक क्रमांक (Number) प्रदान किया जाता है एवं अन्य सूचनाएँ जैसे— ठेका स्थान (Site), ठेका प्रारंभ करने की तिथी, ठेका मूल्य, एवं ठेका कार्य पूरा किये जाने की तिथि आदि का उल्लेख किया जाता है.

ठेके खाते से संबंधित विभिन्न मदों का स्पष्टीकरण :→

(A) Contract Account के डेबिट पक्ष में निम्नलिखित मदों को दिखाया जाता है :→

(1) सामग्री (Materials) :→ ठेका कार्य को पूरा करने के लिए प्रयोग की जाने वाली सामग्री के मूल्य को डेबिट (Debit) में दिखाया जाता है. यह सामग्री निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त हो सकती है —

Scanned with CamScanner

(a) स्टोर्स से सामग्री का निर्गमन करके
(b) बाजार से सामग्री का क्रय करके तथा
(c) अन्य ठेकों से सामग्री का स्थानांतरण करके।

(2) प्रत्यक्ष मजदूरी :- ठेका कार्य को सम्पन्न करने के लिए कुछ श्रमिक, मिस्त्री आदि लगाये जाते हैं। इन्हें दिये जाने वाले पारिश्रमिक की राशि को मजदूरी के रूप में डेबिट में दिखाया जाता है। यदि मजदूरी बकाया होती है तो इसे डेबिट पक्ष में outstanding wages के रूप में दिखाया जाता है।

(3) प्रत्यक्ष व्यय :- सामग्री तथा श्रम के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रत्यक्ष व्यय भी होते हैं जिनका ठेके से प्रत्यक्ष संबंध होता है जैसे:- नक्शा बनाने का खर्च, वैधानिक व्यय, सर्वेक्षण संबंधी व्यय, ढुलाई व गाड़ी भाड़ा आदि। इन प्रत्यक्ष व्ययों को ठेका खाते के डेबिट पक्ष में दिखाया जाता है।

(4) अप्रत्यक्ष व्यय :- वे व्यय जो किसी एक विशिष्ट ठेके के लिए न होकर सामूहिक रूप से सभी ठेकों के लिए किये जाते हैं उन्हें अप्रत्यक्ष व्यय कहा जाता है जैसे:- कार्यालय व्यय, निरीक्षक व प्रबंधक का वेतन, तथा तकनीशियन एवं इंजीनियर का वेतन आदि।

(5) प्लांट एवं औजार (Plant and Tools) :- ठेका कार्यों को पूरा करने में विभिन्न प्रकार के प्लांट, मशीन तथा यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। जब ठेके के लिए इन्हें निर्गमित किया जाता है तब डेबिट पक्ष में इसकी लागत को दिखाया जाता है। तथा कार्य समाप्ति या लेखा वर्ष के अंत में यदि प्लांट का कुछ हिस्सा स्टोर्स में वापस, या बेच दिया गया हो, या नष्ट हो गया हो तो इसे ठेका खाता के क्रेडिट भाग में दिखाया जाता है —

Scanned with CamScanner

(6) उप-ठेका लागत :- जब ठेकेदार अपने ठेके का कुछ भाग पूरा करने का ठेका किसी दूसरे ठेकेदार को दे देता है तो उप-ठेका को उस पर जो व्यय किया जाता है उसे उप-ठेका लागत कहा जाता है। इसे ठेका खाते के डेबिट भाग में दिखाया जाता है।

(7) संभावित व्ययों के लिए आयोजन :- ठेका का कार्य पूरा हो जाने के बाद भी ठेका मूल्य का पूर्ण अथवा आंशिक भुगतान कुछ समय तक कार्य की जाँच करने के बाद किया जाता है। अतः इस अवधि में होने वाले संभावित व्ययों के लिए आयोजन करने के बाद ही शेष राशि को लाभ माना जा सकता है। इस आयोजित राशि को ठेका खाते के डेबिट पक्ष में दिखाया जाता है।

(B) ठेका खाता के क्रेडिट पक्ष में निम्नलिखित मदों को दिखाया जाता है :—

ठेका पूर्ण होने पर :—

(1) ठेका मूल्य (Contract Price) :- यदि ठेका कार्य पूर्ण हो गया हो तो ठेका मूल्य को ठेका खाता में क्रेडिट पक्ष में दिखाया जाता है। इस संबंध में Contractee के व्यक्तिगत खाते का नाम लिखा जाता है।

(2) लौटायी गई सामग्री व संयंत्र :- ठेका स्थल से कोई सामग्री या संयंत्र वापस किया जाता है तो उसे क्रेडिट पक्ष में दिखाया जाता है।

(3) सामग्री या संयंत्र का अन्य ठेकों को स्थानांतरण करने :- जब अनावश्यक सामग्री व संयंत्र दूसरे ठेके को स्थानांतरित किया जाता है तो उस स्थानांतरित सामग्री व संयंत्र के मूल्य को ठेका खाता के क्रेडिट पक्ष दिखाया जाता है।

Scanned with CamScanner

(घ) सामग्री व संयंत्र की चोरी या नष्ट मूल्य को भी क्रेडिट पक्ष में दिखाया जाता है।

(ङ) स्थल पर सामग्री एवं स्थल पर संयंत्र आदि को भी इसी ठेका खाता के क्रेडिट पक्ष में By Materials at site, तथा By Plant at site के रूप में दिखाया जाता है।

जब ठेका कार्य अपूर्ण हो तब :—

उपरोक्त मदों के अलावा निम्न लिखित मदों को भी क्रेडिट पक्ष में दिखाया जाता है :—

(1) Work-in-Progress (चालू कार्य) :—
इसके अंतर्गत मुख्य रूप से दो मदों को दिखाया जाता है —
(a) प्रमाणित कार्य का मूल्य (Work Certified)
(b) अप्रमाणित कार्य का मूल्य (Work Uncertified)

Scanned with CamScanner